राज्य अध्याय 32

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट)	***(शांत समय)***
		नीतिवचन 27,28,29 और 31

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 27,28,29 और 31) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट)	***(रोमियों में प्रमुख पद)***
		(12) रोमियों 8:38-39

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(12) रोमियों 8:38-39। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, जीवन, स्वर्गदूत, प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है, अलग कर सकेगी।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)	***(रोमियों की पत्री)***
		रोमियों 8:18-39

परिचय। **रोमियों 8:18-39** का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें।

मसीहियों का उद्धार, जो पिता परमेश्वर द्वारा *प्रस्तावित* किया गया, पुत्र मसीह द्वारा *प्राप्त* किया गया, पवित्र आत्मा द्वारा *लागू* किया गया और सुसमाचार में घोषित किया गया (रोमियों 1:16), बिल्कुल निश्चित है!

मसीहियों का उद्धार परमेश्वर पिता द्वारा अनंतकाल में पारित किया गया। मसीहियों का उद्धार परमेश्वर के चुनाव के अनंत उद्देश्य में *आधारित है,* जो उन लोगों के लिए उसका अनर्जित और कभी न बदलने वाला प्रेम है जो यीशु मसीह में विश्वास से आते हैं। जब हम पापी ही थे, परमेश्वर के शत्रु और पूर्णरूप से खोए हुए थे (रोमियों 5:6,8,10), परमेश्वर ने पहले हम से प्रेम किया (1यूहन्ना 4:19)!

मसीहियों का उद्धार समय (उद्धार के इतिहास) में परमेश्वर के पुत्र द्वारा अर्जित (अधिग्रहित) किया गया। मसीहियों का उद्धार क्रूस पर यीशु के प्रायश्चित बलिदान द्वारा *कमाया* गया और और वर्तमान में यीशु मसीह के संप्रभु शासन और महायाजकीय कार्य के द्वारा *संपादित* किया गया (इब्रानियों 7:25)।

मसीहियों का उद्धार वर्तमान समय में परमेश्वर पवित्र आत्मा द्वारा लागू किया गया। मसीहियों का उद्धार व्यक्तिगत हृदयों और जीवनों पर *लागू किया गया* है, जहाँ इसे वास्तविकता बना दिया गया है। यह पवित्र आत्मा द्वारा किया गया है जो मसीहियों में वास करने के लिए आता है।

मसीहियों का उद्धार अब मसीहियो द्वारा घोषित किया गया है। मसीहियों का उद्धार सुसमाचार में पुराने नियम (रोमियों 3:25) और नए नियम (रोमियों 16:25-26) में प्रकट और घोषित किया है।

मसीहियों का उद्धार निश्चित है। रोमियों 8:18-39 में, पौलुस इस सुरक्षा और आश्वासन को मसीह में विश्वासियों को सिखाना जारी रखता है।

- मसीहियों का उद्धार इस आशा पर आधारित है कि अंत में सब कुछ नया किया जाएगा (रोमियों 8:18-28)!
- मसीहियों का उद्धार इस तथ्य पर आधारित है कि मसीही उद्धार की परमेश्वर की अनंत योजना के पात्र हैं (रोमियों 8:29-30)!
- मसीहियों का उद्धार निश्चित है क्योंकि परमेश्वर उनकी ओर है और उन्हें हर वो चीज दी है जिसकी आवश्यकता उन्हें इस अनंत योजना को पूरा करने के लिए है (रोमियों 8:31-34)।
- मसीहियों का उद्धार सुरक्षित है, क्योंकि उनके लिए परमेश्वर का प्रेम असीम और अपरिवर्तनीय है (रोमियों 8:35-39)!

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 8:18-39 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

8:18-28

खोज 1. **मसीही सुरक्षित हैं (बचाए गए और आश्वस्त), क्योंकि प्रत्येक वर्तमान दुःख में, वे पवित्र आत्मा की सयाहता से सभी चीजों के नवीनीकरण की आशा में बने रहते हैं और इस बात को समझते हैं कि प्रत्येक परिस्थिति पर परमेश्वर का संप्रभु नियंत्रए है।**

तीन तथ्य मसीहियों को उनके वर्तमान कष्टों की बीच प्रोत्साहित करते हैं। भविष्य में चीजों का नवीनीकारण, वर्तमान में पवित्र आत्मा का अंतःकरण और जो कुछ भी होता है, उस पर परमेश्वर के शाश्वत प्रभुत्व का नियत्रंण। परमेश्वर मसीहियों *के लिए उन में और उन पर* कार्य कर रहा है!

- रोमियों 8:18-25 सिखाता है कि परमेश्वर मसीहियों के भविष्य के लिए कार्य कर रहा है। परमेश्वर के भाविष्य में सब चीजों के नवीनीकरण की आशा, जिसमें नाशवान शरीरों का पुनरूत्थान शामिल है, मसीहियों को उनके दुःखों मे स्थिर करती है।

- रोमियों 8:26-27 सिखाता है कि परमेश्वर मसीहियों के वर्तमान में कार्य कर रहा है। पवित आत्मा नियमित रूप से उनकी कमजोरियों में उनकी सहायता करता है। वह उनके लिए मध्यस्ति करता है, परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रार्थना करता है, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।
- रोमियों 8:28 सिखाता है कि परमेश्वर मसीहियों की परिस्थितियों के ऊपर काम कर रहा है। संप्रभुता के साथ परमेश्वर हर उस चीज को नियंत्रित करता है जो उनके जीवन के दौरान होती है।

8:29-30

खोज 2. **मसीही सुरक्षित हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के उद्धार की अनंत योजना के पात्र हैं।**

मसीही अनंत जीवन की प्राप्ति के लिए पूर्वनिर्धारित हैं (तुलना करें 2थिस्सलुनीकियों 2:13-15; 2तीमुथियुस 1:9)। मसीहियों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य आदि से अंत तक उनका *पूर्ण* उद्धार है! परमेश्वर का चुना हुआ प्रेम उनके उद्धार की *शुरूआत* है और परमेश्वर की पूर्व-प्रधान महिमा उनके उद्धार का *अंतिम लक्ष्य* है। परमेश्वर के उद्धार की योजना के सभी भाग अविभाजित रूप से जुड़े हुए हैं। जिन लोगों को वह चुनता है (पूर्वाभाव और पूर्वनिर्धारित), वह उन्हें, धर्मी और महिमावान कहता है! उनका शुद्धिकरण जो उन्हें महिमामय होने कि ओर ले जाता है वह परमेश्वर के उद्धार की अनंत योजना का परिणाम है। इसलिए मसीहियों का उनके जीवन में वास्तविक शुद्धिकरण उनके चुने हुए होने का प्रमाण है (इफिसियों 1:4-5)। इस प्रकार, परमेश्वर सब बातों में अपने अनंत उद्देश्य के अनुरूप काम करता है (इफिसियों 1:11; रोमियों 9:11; यशायाह 14:24,27)।

8:31-34

खोज 3. **मसीही सुरक्षित हैं, क्योंकि परमेश्वर उनकी ओर है (उनके विरूद्ध नहीं) और उन्हें हर वो चीज दी हैं जिसकी आवश्यकता उन्हें उसके अनंत उद्देश्य को पूरा करने के लिए है।**

यदि परमेश्वर मसीहियों *की ओर* है तो उनका *विरोधी* कौन हो सकता है? यदि परमेश्वर ने उन्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र किया है (पापमय स्वभाव की प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली सामर्थ्य), यदि परमेश्वर ने उनका नवीनीकरण उनमें बसने वाले अपने पवित्र आत्मा से किया है, यदि परमेश्वर उन्हें अपनी स्वयं की संतान और वारिस के रूप में पहचानता है, यदि परमेश्वर ने उन्हें धर्मी ठहरने, पवित्र होने और अन्तिम महिमा के लिए पूर्वनिर्धारित किया है, तो कौन है जो उनका विरोधी हो सकता है (रोमियों 8:31)?

यदि परमेश्वर ने बड़े काम किए हैं, तो क्या वह छोटे कामों को बिना किए छोड़ देगा? यदि परमेश्वर ने अपने उद्धार के कार्य को यीशु मसीह के द्वारा पूरा किया है, वह निश्चित रूप से उद्धार के अपने कार्य को मसीहियों (अपने चुने हुओं) में भी पूरा करेगा (रोमियों 8:33)! यदि परमेश्वर ने अपने अनंत उद्देश्य में मसीहियों के लिए अपने पुत्र, यीशु मसीह को दे दिया, वह निश्चित रूप से मसीहियों को आवश्यकता के समय वह सब कुछ देगा जिसकी जरूरत उन्हें अपने उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए है! मसीहियों के लिए परमेश्वर का अपरिर्वतनीय प्रेम मसीहियों को कभी असफल नहीं होने देगा (रोमियों 8:32)! यदि परमेश्वर अंतिम न्यायी है जो अपने चुनें हुओं को धर्मी ठहराता है, फिर एक भी दोष मसीहियों के विरूद्ध खड़ा न रह सकेगा! चार कारण हैं जिनकी वजह से कोई भी अब मसीहियों को दोषि नहीं ठहरा सकता, मसीह की मृत्यु, पुररूत्थान, सिंहासन पर विराजमान होना और नियमित रूप से मध्यस्थता करना (रोमियों 8:33-34)।

8:35-39

खोज 4. **मसीही सुरक्षित है, क्योंकि उनके लिए परमेश्वर का प्रेम अनंत और अपरिवर्तनीय है।**

मसीही, लोगों के ऊपर ''जयवतं से बढ़ कर'' हैं, क्योंकि कोई भी मनुष्य उन्हें, उनके लिए परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता। कोई भी व्यक्ति जिसका सामना मसीही इस संसार में करते हैं, परमेश्वर को उसके अनंत उद्देश्य को मसीहियों के जीवन में पूरा करने से नहीं रोक सकता! परमेश्वर केवल उन दुःखों को दूर ही नहीं करता जिन्हें लोग मसीहियों पर डालते हैं, उन्हें वास्तविक और स्थायी नुकसान पहुँचाने के द्वारा, बल्कि परमेश्वर इन सभी दुःखों का प्रयोग संप्रभु तरीके से मसीहियों के लिए भलाई उत्पन्न करने के लिए करते हैं! वे दुःख जिनका सामना मसीही करते हैं वह अंतिम विजय की महिमा को और बढ़ा देते हैं (रोमियों 8:35-37)।

मसीही, चीजों के ऊपर ''जयवंत से बढ़ कर'' हैं, क्योंकि सृष्टि में कुछ भी उन्हें, उनके प्रति परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता। कुछ भी जिसका सामना मसीही भौतिक संसार, आत्मिक संसार, वर्तमान और भविष्य के संसार में करते हैं उन्हें, उनके प्रति परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता! हर संभावित निराशा पर जय पाने के लिए पौलुस इस बात को जोड़ता है, ''इस सृष्टि की कोई भी चीज'' मसीहियों को उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग करने में सक्षम नही होगी!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 8:18-39 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

8:18-25

प्रश्न 1. **आशा मसीहियों को उनके कष्टों के बीच किस प्रकार बनाए रखती है?**

ध्यान दें। रोमियों 8:18-25 मसीहियों के *भविष्य के लिए* परमेश्वर के काम का वर्णन करता है। मसीही अपने वर्तमान कष्टों में परमेश्वर द्वारा भाविष्य में सब कुछ नया करने की प्रतिज्ञा की आशा द्वारा बने रहते हैं, जिसमें उनके नाशवान शरीर का पुनरूत्थान भी शामिल है।

(1) वर्तमान सृष्टि की निराशा और सड़ाहट के प्रति अधिनता अस्थायी है।

परमेश्वर ने सम्पूर्ण भौतिक और विवेक हीन सृष्टि को ''निराशा'' (सूनापन, व्यर्थता, उद्देश्यहीनता, नश्वरता) (यूनानी: मेटाओट्स) (तुलना करें इफिसियों 4:17, खाली शब्द 2पतरस 2:18 से), के अधीन कर दिया, अर्थात्, पतित आदमी में श्राप में साझा करने के लिए। वर्तमान सृष्टि क्षणभगुर है, सड़ाहट के अधीन है और इसीलिए उद्देश्यहीनता के तहत करहाती है। यह करहाती है, क्योंकि यह उस उद्देश्य को प्राप्त नहीं करती जो परमेश्वर ने इसके लिए किया था। सारी सृष्टि मिलक करहाती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है (रोमियों 8:22)।

हालाँकि, इसका करहाना आशाहीन नहीं है, लेकिन यह एक गर्भवती माँ के समान करहाती है। यह जानती है कि इसकी प्रसव पीड़ा के बाद, महीमा निश्चित रूप से प्रगट होगी। साथ ही मसीही भी आंतरिक रूप से

करहाते हैं और उत्सुकता से भविष्य की महिमा के प्रकाशन (नई पृथ्वी) की बाट जोह रहे हैं! मसीहियों के पास पवित्र आत्मा ''पहले फल'' या ''अग्रिम भुगतान'' (जमा, गिरवी, बन्धक) के रूप में है, जो इस बात की खातरी देता है कि वे भविष्य की महिमामय मिरास के उत्तराधिकारी होंगे (रोमियों 8:23)।

(2) भविष्य में सभी चीजों का नवीनीकरण आशा का मुद्दा है, एक पूर्ण भविष्य की निश्चितता और भविष्य की वास्तविकता!

भविष्य में, सब चीजों के नवीनीकरण में (तुलना करें मत्ती 19:28 से; प्रेरितों. 3:21; यशायाह 65:17; 2पतरस 3:13), सम्पूर्ण सृष्टि सड़हट के बंधन से मुक्त की जाएगी और मसीहियों की भविष्य की महिमा में साझी होगी। इब्रानियों 12:26-29 सिखाता है कि मसीह के दूसरे आगमन पर सम्पूर्ण सृष्टि ''हिलायी'' (यूनानीः सिओ, हिलाना, थरथराना) जाएगी। ''जो कुछ हिलाया जा सकता है वह हटा दिया जाएगा''। परमेश्वर अपनी पवित्रता और शुद्धता के श्वेत तेज से हर उस चीज को भस्म करेगा जो उसके योग्य नहीं (इब्रानियों 12:29)। मसीह के स्वर्गदूत उसके राज्य में से सब पाप के कारणों और बुराई करने वालों को (नाश करेंगे या) निकाल देगें (मत्ती 13:41)।

हालाँकि, ''जो कुछ हिलाया नहीं जाएगा, वह बना रहेगा''। परमेश्वर का राज्य जो मसीही, यीशु मसीह के साथ बाँटते हैं वह हिलाया नहीं जा सकता (इब्रानियों 12:28)। आकाश और पृथ्वी नए कर दिए जाएंगे, आकाश आपनी सिद्ध दशा में पृथ्वी पर उतारा जाएगा और पृथ्वी मसीहियों का घर बनेगी (2पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:1-5)। संसार नई सुंदरता से ढ़क जाएगा। पहाड़ उपजाऊ भूमि में बदल जाएँगें (यशायाह 29:17) और रेगिस्तान आंनदित और प्रफुल्लित होंगे (यशायाह 35:1-2; यशायाह 32:15-16)। स्वर्ग का सामंजस्य नई पृथ्वी पर उतरेगा, और जो कुछ भी एक दूसरे के विरोध में काम करता है, एक दूसरे को मार डालता है, वह एक दूसरे साथ सामंजस्य में रहेगा। उदाहरण के लिए जंगली जनवर एक दूसरे के साथ शांति से रहेंगे (यशायाह 11:1-9)। मसीही अपने वास्तविक चरित्र में परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट होंगे (रोमियों 8:19)। लेपापलकपन के पुत्रों के रूप में उनकी महिमा पूर्ण रूप से प्रकट होगी, विशेषरूप से उनकी शरीरिक देह के पुनरूत्थान में (रोमियों 8:23)।

भाविष्य में सभी चीजों के नवीनीकरण में आशा (अर्थात्, एक बहुत निश्चित अपेक्षा) रखना मसीहियों की विशेषता है! मसीहियों का उद्धार विश्वास से हुआ है और उनका उद्धार आशा के द्वारा स्थिर है, अर्थात्, उनका वर्तमान उद्धार आशा के द्वारा प्रतिंधित/निर्धारित और आशा की और उन्मुख/निर्देशित है। मसीही जानते हैं कि उनका उद्धार जो इस समय उनके पास है वह अधूरा है और भविष्य का अंतिम और पूर्ण उद्धार आशा (अपेक्षा) और साथ ही साथ भविष्य की निश्चितता और वास्तविकता का मुद्दा है! जबकि मसीही अपनी आशा के पात्र को अपनी शरीरिक आँखों से नहीं देख सकते फिर भी भविष्य में चीजों का यह नवीनीकरण एक निश्चित वास्तविकता है! इसलिए मसीही धीरज से इस भविष्य की प्रतिक्षा करते हैं, अर्थात, मसीही धीरज के साथ पृथ्वी पर मौजूद कष्टों को झेल सकते हैं (रोमियों 8:25)।

8:26-27

प्रश्न 2. **पवित्र आत्मा किस प्रकार मसीहियों को उनके कष्टों के बीच स्थिर रखता है?**

ध्यान दें। रोमियों 8:26-27 मसीहियों के *बीच में* परमेश्वर के काम का वर्णन करता है। मसीही पवित्र आत्मा की नियमित सहायता से अपने वर्तमान कष्टों में स्थिर रहते हैं। वे अपनी सभी कमजोरियों में स्थिर रहते हैं, विशेषरूप से उनके लिए उसके निवेदन (मध्यस्थता) के द्वारा। पवित्र आत्मा मसीहियों की जरूरतों के लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना करता है जिसे वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते या यहाँ तक कि जब उन्हें यह एहसास भी नहीं होता कि उन्हें इस चीजों की जरूरत हैं।

(1) पवित्र आत्मा मसीहियो की उनकी सभी कमजोरियों में सहायता करता है।

''इसी प्रकार'' (रोमियों 8:26) का अर्थ है, जिस प्रकार *वर्तमान कष्टों* में मसीही महिमामय आशा को बनाए रखते हैं, उसी प्रकार पवित्र आत्मा *वर्तमान कमजोरियों* में मसीहियों की सहायता करता है। आत्मा को नम्रता के साथ उन दुःखों के बोझ के एक हिस्से को अपने ऊपर उठाने वाले के रूप में, जिसे मसीही सहते हैं और नियमित रूप से मसीहियों की सहायता करने के लिए आने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। कमजोरियाँ किसी भी प्रकार की कमजोरियाँ हो सकती हैं (इब्रानियों 4:15; 2कुरिन्थियों 12:5) चाहे टूटे हुए संसार के सामान्य दुःख या फिर मसीह के लिए विशेष दुःख या सताव। प्रार्थना की बात में यह निश्चित रूप से उनकी कमजोरियों तक सीमित नहीं है!

(2) पवित्र आत्मा मसीहियों की विशेषरूप से उन आवश्यकताओं में सहायता करता है जिसे वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते या उन्हें यह महसूस ही नहीं होता कि उन्हें क्या आवश्यकता है।

मसीहियों की ओर सदैव नैतिक और आत्मिक विफलताएँ होती है इसलिए वे प्रार्थना या वह नहीं कर पाते जो उनका कर्तव्य है। मसीहियों को हमेशा यह नहीं पता होता की उन्हें क्या प्रार्थना करना है, अर्थात, किसी विशेष परिस्थिति में कौन सी प्रार्थना काम आएगी। जबकि वे जानते हैं कि *सामान्य रूप से* क्या प्रार्थना करें, वे अक्सर यह नहीं जान पाते कि *विशेष* आवश्यकता, कठिनाई और परिस्थिति में क्या प्रार्थना करें। वे इस बात के प्रति सुनिश्चित नहीं होते कि उनकी प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा के साथ समांजस्य में है या नहीं (तुलना करें यूहन्ना 5:14)। मसीही अक्सर अपने स्वयं के हृदय की गहन आवश्यकताओं को नहीं जान पाते। इसलिए वे स्वयं को अपनी प्रार्थनाओं में व्यक्त नहीं कर पाते।

लेकिन पवित्र आत्मा मसीहियों की वास्तविक आवश्यकताओं को जानता है, उन आवश्यकताओं को भी जिन्हें वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते और साथ ही उन आवश्यकतओं को भी जिन्हें वे स्वयं नहीं जानते। एक सच्चे वकील (मसीह के प्रतिनिधि) के रूप में, पवित्र आत्मा स्वयं की पहचान मसीहियों की आवश्यकताओं से करवाता है और परमेश्वर पिता के साथ मध्यस्थति करता है ताकि ये आवश्यकताएँ पूरी की जाएँ! क्योंकि आत्मा के सोचने का तरीका, परमेश्वर के सोचने का तरीका है, आत्मा की मध्यस्थता *सिद्ध* और *सदैव प्रभावशाली* होती है! मसीहियों में आत्मा द्वारा परमेश्वर से विनती (मध्यस्थता) *कभी विफल नहीं हो सकती!*

- यही कारण है कि एक भी वास्तविक मसीही कभी नहीं खोया (रोमियों 8:29-30; यूहन्ना 18:9)।
- इसलिए एक मसीही के साथ कभी वह नहीं होता जिसकी अनुमति पहले परमेश्वर से न मिली हो (मत्ती 10:29)।
- इसलिए एक मसीही के साथ कभी ऐसा कुछ नहीं होता जो वास्तविक रूप से परमेश्वर की सिद्ध योजना को उसके जीवन में पूरा करने के लिए योगदान न करें (रोमियों 8:28)।
- इसलिए कभी भी कोई भी प्रलोभन (लालच) या परीक्षा बहुत बड़ी नहीं होती (1कुरिन्थियों 10:13)।

8:28-30

प्रश्न 3. **परिस्थितियों के ऊपर परमेश्वर का संप्रभु नियंत्रण मसीहियों को उनके कष्टों के बीच किस प्रकार स्थिर रखता है?**

ध्यान दें। रोमियों 8:28-30 मसीहियों के *ऊपर* परमेश्वर के कार्य का वर्णन करता है। मसीही अपने वर्तमान कष्टों के बीच, जो कुछ भी उनके साथ होता है उस पर परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण के द्वारा स्थिर रहते हैं।

(1) परमेश्वर का मसीहियों की विशेष परिस्थितियों पर संप्रभु नियंत्रण है।

मसीही कष्टों से मुक्त या आजाद नहीं हैं। फिर भी वे जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्ही के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं'' (रोमियों 8:28)। मसीहियों के लिए यह एक बड़ा आराम, प्रोत्साहन और आश्वासन है, उनके लिए जो बाइबल के परमेश्वर को नियमित रूप से प्रेम करते हैं।

मसीही इस आराम, प्रोत्साहन और आश्वासन को व्यक्तिगत अनुभव, अन्य मसीहियों के अनुभव और बाइबल की शिक्षाओं द्वारा जानते हैं। अच्छी और बुरी दोनों परिस्थितियाँ और घटनाएँ मिलकर परमेश्वर की सिद्ध योजना को प्राप्त करने के लिए सहयोग करती हैं। मसीहियों के जीवन में बहुत सी घटनाएँ अपने आप में बुरी होती हैं, लेकिन परमेश्वर के सिद्ध प्रेम, अनुग्रह और बुद्धि के कारण, परमेश्वर उन बुरी चीजों को भी व्यक्तिगत मसीही और परमेश्वर के राज्य और महिमा दोनों की भलाई के लिए काम में लाता है। अंततः ऐसा कुछ भी नहीं है जो मसीहियों की भालाई के लिए योगदान न दे।

"यहोवा ने सब वस्तुएं विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं, वरन् दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है।"(नीतिवचन 16:4) "मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूँ" (यशायाह 45:7)। "मैं ने तुझे इसी लिये खड़ा किया है कि तुझ में अपनी सामर्थ्य दिखाऊं, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो"(रोमियों 9:17)।

(2) परमेश्वर का मसीहियों के उद्धार पर संप्रभु नियंत्रण है।

विश्वासियों का महिमा पाना। परमेश्वर की अपनी सृष्टि के लिए, इतिहास के लिए और प्रत्येक विश्वासी के लिए अंनत योजना है और कोई भी उस योजना को विफल नहीं कर सकता (तुलना करें यशायाह 14:24,27 से)! आदि से ही परमेश्वर ने मसीहियों को चुन लिया कि वे पवित्र आत्मा के शुद्धिकरण के काम द्वारा और सत्य में विश्वास के द्वारा उद्धार पाएँ। उसने उन्हें सुसमाचार के माध्यम से इसलिए बुलाया ताकि वे यीशु मसीह की महिमा में सहभागी हों (तुलना करें 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14 और रोमियों 8:29-30 से)। परमेश्वर के पास एक अनंत उद्देश्य है जिसमें उसने कुछ विशेष लोगों को उद्धार के लिए चुना है और जिसमें उसने उन्हें समीह की समानाता के अनुरूप होने लिए पूर्वनिर्धारित किया है (रोमियों 8:29; तुलना करें इफिसियों 1:4 से)।

परमेश्वर समय में अपनी योजना को पूरा करता है (तुलना करें इफिसियों 1:10 से)। जो कुछ परमेश्वर ने *अंनत काल* में उद्देश्य किया था वह उसे समय में पूरा करता है। परमेश्वर हमेशा प्रथम है, केवल अपने अनंत उद्देश्य में ही नहीं, बल्कि जो कुछ उसने समय में पूरा किया उस में भी। यीशु मसीह का प्रथम आगमन तब हुआ ''जब समय पूरा हुआ'' (गलातियों 4:4)। किसी समय पर परमेश्वर उन लोगों को बुलाता है जिन्हें उसने अनंत काल में चुना था (2तीमुथियुस 1:9-10)। वह उन्हें अन्य मसीहियों के माध्यम से बुलाता है जिन्हें उसने सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा। वह उन्हें सुसमाचार की बाहरी बुलाहट के माध्यम से बुलाता है जो कि प्रचार किया गया और पवित्र आत्मा की अंदरूनि बुलाहट के माध्यम से जो उन्हें नया जन्म और यह विश्वास देता है (प्रेरितों 13:48; 16:14; 18:27; इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 1:29; इब्रानियों 12:2) कि वे यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें।

सुसमाचार के माध्यम से *बाहरी बुलाहट* हमेशा प्रभावशली नहीं होती (तुलना करें मत्ती 10:14 से; मत्ती 22:14)। हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो सुसमाचार सुनते हैं लेकिन उसका प्रतिउत्तर नहीं देते और यहाँ तक कि उसे अस्वीकार कर देते हैं। लेकिन *परमेश्वर की अंदरूनि बुलाहट हमेशा प्रभावशाली होती है* (तुलना करें रोमियों

1:7 से)! इसलिए यूहन्ना 6:44 और 37 सिखाता है कि, जब परमेश्वर लोगों को मसीह के पास अपने संप्रभु तरीके से लाता है, वे निश्चितरूप से मसीह के पास आएंगे और वे निश्चित रूप से उद्धार पाएंगे! और इसलिए रोमियों 8:29-30 सिखाता है कि, जिस व्यक्ति को परमेश्वर बुलाता है वह धर्मी ठहर चुका और जो धर्मी ठहर चुका वह महिमावान भी ठहरा। परमेश्वर अपनी संप्रभुता में मसीहियों के सम्पूर्ण उद्धार को आदि से अंत तक नियंत्रित करता है!

यीशु मसीह की पूर्व-प्रतिष्ठा। एक अंतिम छोर है जो विश्वासियों के महिमावान होने से अधिक श्रेष्ठ है जो कि यीशु मसीह की पूर्व-प्रतिष्ठा है (कुलुस्सियों 1:18)! मसीह हमेशा ''बहुत से भाईयों के बीच पहिलौठा'' रहेगा (रोमियों 8:29)। यीशु मसीह ने कभी स्वयं को उन लोगों से अलग नहीं समझा जिन्हें बचाने के लिए वह आया (इब्रानियों 2:11)। इसलिए मसीहियों को ''उसके भाई'' कहा गया है। लेकिन इन सभी भाईयों के बीच मसीह पूर्व-प्रतिष्ठित है! इसलिए यीशु मसीह को ''पहिलौठा'' कहा गया है।

''पहिलौठे'' की अभिव्यक्ति यीशु के वर्णन के अनुकूल है जो परमेश्वर की ओर से संतो के एक नए समाज को, मसीहियों के भाईचारे, कलीसिया की खोज करने आया। यीशु मसीह इस नए समाज में प्रथम है! लोगों के उद्धार में परमेश्वर का उद्देश्य केवल इतना नहीं था कि लोग पवित्र और प्रसन्न हों, बल्कि उस पवित्रता और प्रसन्नता के द्वारा हर जगहा और सदा के लिए यीशु मसीह की महिमा प्रदर्शित हो। संसार में परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में चुने हुए मसीही नहीं बल्कि यीशु मसीह केंद्र बिन्दु है। ''पवित्र आत्मा यीशु मसीह की महिमा करेगा'' (यूहन्ना 16:14)! यीशु मसीह की महिमा परमेश्वर पिता की महिमा का सर्वोत्तम प्रगटिकरण है। सृष्टि और उद्धार दोनों का सर्वोच्च लक्ष्य परमेश्वर की महिमा है (रोमियों 11:33-36)! केवल परमेश्वर की महिमा!

8:31-34

प्रश्न 4. **मसीहियों को परमेश्वर का समर्थन उन्हें किस प्रकार उनके कष्टों के बीच स्थिर रखता है?**

ध्यान दें। रोमियों 8:31-34 मसीहियों *के लिए* परमेश्वर के काम का वर्णन करता है। मसीही अपने कष्टों के बीच में परमेश्वर के समर्थन द्वारा स्थिर रहते हैं (परमेश्वर दोष के विरूद्ध उनकी रक्षा करता है, उन्हें दोष मुक्त करता है और उन्हें सही घोषित करता है)।

(1) परमेश्वर मसीहियों की ओर है!

परमेश्वर ने यीशु मसीह को विश्वासियों को दिया! इसलिए परमेश्वर विश्वासियों को वह सब कुछ उदारता से देगा जिसकी आवश्यकता उन्हें अपने उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए है! परिणाम यह है कि मसीहियों को इस बात का आश्वासन है कि वे निश्चित रूप से धर्मत्याग और घातक पापों से बचे रहेगें। उद्धार की एक प्रतिज्ञा जिसमें पवित्रता शामिल नहीं, उसमें कुछ भी शामिल नहीं! बाइबल में, उद्धार पाप के बिल्कुल विपरीत व किसी तरह उससे मेल खाने वाला नहीं होता है। उद्धार में पवित्रता निश्चित रूप में शामिल होती है। उद्धार के अन्त में पवित्रता प्राप्त होती है। इसलिए परमेश्वर के उद्धार (धर्मी ठहरने) के काम में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा और पवित्रता का काम शामिल हैं। परमेश्वर द्वारा पापियों के शुद्धिकरण के बिना, परमेश्वर द्वारा पापियों का धर्मी ठहरना अकल्पनीय है! जब परमेश्वर ने मसीहियों को अपना सबसे बड़ा वरदान, यीशु मसीह दे दिया, तो वह निश्चित रूप से उन्हें हर वो वरदान देगा जिसकी आवश्यकता उन्हें अपने उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए है। मसीहियों के लिए परमेश्वर का असीम प्रेम न तो मसीहियों को विफल करता है, और न ही मसीहियों को विफल करेगा (रोमियों 8:31-32)!

(2) परमेश्वर मसीहियों को सही घोषित करता है।

परमेश्वर अंतिम न्यायी है जो अपने चुने हुओं को सही घोषित करता है (जब परमेश्वर उन्हें धर्मी ठहराता है), इसलिए कोई दोष मायने नहीं रखता!

ऐसा कुछ भी नहीं जो पाप से ज्यादा भयानक हो। लेकिन जब उद्धार में पाप को क्षमा कर हटा दिया है तो फिर डरने के लिए अब कुछ भी बाकि नहीं रहा! ऐसा कोई नहीं जो मसीहियों को न्याय के न्यायालय में बुला सके। हालाँकि मसीहियों का विवेक अब भी उनकी भर्त्सना करता है, लेकिन अब यह उन्हें भयभीत नहीं करता (1यूहन्ना 3:19-20)! हालाँकि मसीही परमेश्वर की संतान है जो अपने पापों के लिए दुःख व्यक्त करते हैं (2कुरिन्थियों 7:9-11), लेकिन वे खोए हुए लोगों के समान निराश नहीं होते (प्रकाशितवाक्य 6:15-17)। यद्यपि मसीही अभी भी विशेष पाप करते हैं (1यूहन्ना 1:8,10), वे अपने पापों को मान लेते हैं और पूर्णरूप से शुद्ध और क्षमा कर दिए जाते हैं (1यूहन्ना 1:9)।

ऐसे चार कारण है कि अब कोई भी मसीहियों को दोषि (अभिशप्त) नहीं ठहरा सकता।

- यीशु मसीह की मृत्यु ने पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान किया और दोष के आधार को दूर कर दिया।
- यीशु मसीह का पुनरुत्थान इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार किया और स्वयं के विषय में उसके सारे दावे मान्य हैं।
- यीशु मसीह का स्वर्गरोहण और सिंहासन पर विराजमान होना इस बात कि ओर संकेत करता है कि वह भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल की सभी घटनाओं और मसीहियो के व्यक्तिगत जीवन के सभी पहलुओं पर संप्रभु संस्थापक है।
- यीशु मसीह का स्थायी माहायाजकीय पद (इब्रानियों 7:24-25) और स्वर्ग में उसकी मसीहियों के वकील के रूप में परमेश्वर पिता से नियमित मध्यस्थता (1यून्ना 2:1-2; इब्रानियों 4:14-16) इस बात का प्रमाण है कि उसका उद्देश्य सभी मसीहियों को पूर्ण रूप से उद्धार करना है। मसीहियों के लिए अपनी मध्यस्थता में वह इस बात की खातरी देता है कि उसकी मृत्यु के लाभ मसीहियों के जीवन में लागू हों, उनके कारणों को परमेश्वर के सम्मुख रखता है और इस बात की देखरेख करता है कि परमेश्वर के अनंत अनुग्रह की आपूर्ति उनके जीवन में आती रहे (रोमियों 8:33-34; यूहन्ना 1:16)।

8:35-39

प्रश्न 5. **परमेश्वर का प्रेम मसीहियों को उनके कष्टों में किस प्रकार स्थिर रखता है?**

ध्यान दें। रोमियों 8:35-39 मसीहियों के लिए परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करता है। मसीहियों के सभी कष्टों के बीच (वर्तमान सृष्टि और संसार के इतिहास में), परमेश्वर का प्रेम उन्हें स्थिर रखता है। इस जीवन या मृत्यु में कोई भी और कुछ भी एक मसीही को उसके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता। मसीह ने संसार पर जय पायी है और जयंवत बना हुआ है (यूनानीः नेनिकेका) (पूर्ण काल) (यूहन्ना 16:33) और मसीही "जयवंत से बढ़कर हैं या "एक महिमामय विजय प्राप्त कर रहे है" (यूनानीः हुपेरनिकाओ) (वर्तमानकाल) (रोमियों 8:37) उसके द्वारा जिसने उनसे एक बार में हमेशा के लिए प्रेम किया (अनिर्दिष्ट काल)!

चरण 4.लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 8:18-39 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण–पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग–अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 8:18–39 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

8:18. भविष्य की महिमा के प्रकाश में अपने वर्तमान कष्टों पर विचार करें।

8:20–21. हालाँकि वर्तमान सृष्टि निराशा और सड़हट के अधीन है, फिर भी मसीहियो को सांस्कृतिक रूप से उत्पत्ति 1:28 में परमेश्वर द्वारा सृजि गई सृष्टि की देखभाल और सुरक्षा की आज्ञा मिली है।

8:23–24. इस बात को समझें कि विश्वास के द्वारा आपका उद्धार हुआ है (पाप के दोष, सामर्थ्य और विनाश से) ताकि अंततः आपका पूर्ण उद्धार हो (शारीरिक मृत्यु से भी)।

8:26–27. आपके भीतर पवित्र आत्मा पृथ्वी पर से आपके लिए मध्यस्ती करता है, मसीह स्वर्ग में आपके लिए मध्यस्ती करता है। पवित्र आत्मा आपके अदंर से अनभिव्यक्त आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है। यीशु मसीह आपके जीवन में परमेश्वर की योजना और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रार्थना करता है और पृथ्वी पर आपकी सभी अपूर्ण प्रार्थनाओं को स्वर्ग में सिद्ध प्रार्थना में बदल देता है। (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 8:3–5 से)।

8:28. विश्वास करें की आपके साथ जो कुछ होता है उसमें परमेश्वर की अनुमति है और अंत में यह परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को आपके जीवन में पूरा करेगा। निश्चित रूप से आप इस पर तब ही विश्वास कर सकते हैं जब आप परमेश्वर द्वारा बुलाए गए हों और परमेश्वर से प्रेम करते हों।

8:29–30. कभी संदेह न करें कि परमेश्वर ने आपको बुलाया है, धर्मी ठहराया है और आपको पूर्णरूप से शुद्ध करेगा, अर्थात्, आपको महिमावान करेगा। वह उस भले काम को पूरा करेगा जिस उसने आप में शुरू किया है (फिलिप्पियों 1:6)।

8:31–32. विश्वास करें कि जब परमेश्वर ने आपको सर्वोत्तम वरदान दिया है (अपना पुत्र, यीशु मसीह), तो वह आपसे कोई भली वस्तु न रख छोड़ेगा!

8:33–34. विश्वास करें कि जब परमेश्वर ने आपको सही (धर्मी ठहराया है) घोषित किया है, कोई भी दोषारोपण (मनुष्य का या कोई आपके विरोध में खड़ा न रह सकेगा। (साथ ही अंतिम न्याय के दिन भी)(इब्रानियों 8:12)!

8:35–39. पूरी तरह से आश्वस्त हो जाएं कि इस सम्पूर्ण सृष्टि और संसार के इतिहास में ऐसा कोई भी और कुछ भी नहीं है जो आपको अपके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके!

2. रोमियों 8:18–39 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

जो आशा परमेश्वर ने मुझे रोमियों 8 अध्याय से दी है वह मुझे मेरी बीमारियों, कष्टों और सताव में स्थिर रखती है। ये सभी कष्ट अस्थायी हैं। जब परमेश्वर संसार का नवीनीकरण करेगा तब कोई बीमारी, कष्ट, सताव और मृत्यु न होगी। तब नया आकाश सिद्ध अवस्था में नई पृथ्वी पर उतरेगा और मसीही हमेशा के लिए यीशु मसीह की महिमा को साझा करेंगे!

मेरे प्रति परमेश्वर का प्रेम मुझे बीमारियों के कष्टों और सताव में स्थिर रखता है। इस संसार में कोई भी और कुछ भी मुझे मेरे प्रति परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता! इसलिए मैं लोगों के ऊपर, चीजों

और उन घटनाओं के ऊपर जयवंत से बढ़कर हूँ जो मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करती हैं। मैं एक महिमामय विजय हासिल कर रहा हूँ। मेरे प्रति परमेश्वर का प्रेम मेरे जीवन की सभी असफलताओं और कठिनाइयों का प्रयोग मेरे जीवन में उसकी सिद्ध योजना को पूरा करने के लिए करता है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 8:18-39 में सिखाया है।

(इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यशायाह 1,2,3 और 4** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (13) रोमियों 10:9-10।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** लूका 14:28-33 में **"उतावले निर्माणकर्ता"** और **"लापरवाह राजा"** के दृष्टांत को तैयार करें।
   दृष्टांत की व्याख्या करने के लिए छः दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।